



श्री नवग्रह प्रयोगः ॥ अथ श्रीसूर्यग्रह आराधन क्रमः ॥

आदित्यस्य अष्टपरिवार देवताः

- | | |
|---------------|----------------|
| १ - कालात्मकः | ५ - मार्ताण्डः |
| २ - हंसः | ६ - जगन्नाथः |
| ३ - भानुः | ७ - वेदाधीशः |
| ४ - ग्रहनायकः | ८ - त्रिलोचनः |

अस्य श्री आदित्यग्रह महामन्त्रस्य । अगस्त्यो ऋषिः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । सूर्यनारायण देवतायै नमः - हृदि । घृणिरिति बीजाय नमः - गुह्ये । सूर्य इति शक्तये नमः - दक्षस्तने । आदित्य इति कीलकाय नमः - वामस्तने । न्यासे विनियोगः - सर्वाङ्गि ॥

न्यासः

- | | | |
|--------------|-------------------------|-----------------------|
| सूर्याय | - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः | - हृदयाय नमः । |
| तेजोमूर्तये | - तर्जनीभ्यां नमः | - शिरसे स्वाहा । |
| वरदाय | - मध्यमाभ्यां नमः | - शिखायै वषट् । |
| हंसाय | - अनामिकाभ्यां नमः | - कवचाय हुं । |
| शान्ताय | - कनिष्ठिकाभ्यां नमः | - नेत्रत्रयाय वौषट् । |
| कर्मसाक्षिणे | - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | - अस्त्राय फट् । |

- | | | | |
|---------------------|---------------|-----------------------|---------------|
| १ - घृणये नमः | - शिरसि | १२ - भानुमते नमः | - हृदि । |
| २ - सूर्याय नमः | - ललाटे । | १३ - सप्ताश्वाय नमः | - गुह्ये । |
| ३ - आदित्याय नमः | - नेत्रयोः । | १४ - नभोमणये नमः | - नाभौ । |
| ४ - दिवाकराय नमः | - कर्णयोः । | १५ - द्वादशात्मने नमः | - कट्यां । |
| ५ - भानवे नमः | - नासिकयोः । | १६ - सवित्रे नमः | - पृष्ठे । |
| ६ - रवये नमः | - मुखे । | १७ - सुरश्रेष्ठाय नमः | - ऊर्वोः । |
| ७ - जगच्चक्षुषे नमः | - जिह्वायां । | १८ - भास्कराय नमः | - जान्वोः । |
| ८ - विभावसवे नमः | - कण्ठे । | १९ - मार्ताण्डाय नमः | - जङ्घयोः । |
| ९ - ग्रहपतये नमः | - स्कन्धयोः । | २० - त्विषां पतये नमः | - गुल्फयोः । |
| १० - प्रभाकराय नमः | - हस्तयोः । | २१ - दिनमणये नमः | - पादयोः । |
| ११ - अजकराय नमः | - बाह्वोः । | २२ - मित्राय नमः | - सर्वाङ्गि । |

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

द्विभुजं पद्महस्तं च वरदं मुकुटान्वितम् ।
ध्यायेत् दिवाकरं देवं सर्वाभीष्ट प्रदायकम् ॥

श्री सूर्य मण्डलाराधनम्

आसत्येन रजसा ----- यजमानस्य सन्तु ॥

अग्नि अधिदेवता रुद्रप्रत्यधिदेवता सहितं सूर्यग्रहं रक्तवर्णं रक्तपुष्पं रक्तगन्धं रक्तमाल्याम्बरधरं
रक्तच्छत्रध्वज रथपताकादि शोभितं दिव्य रथ समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं प्राङ्मुखं
पद्मासनस्थं द्विभुजं सप्ताश्वं सप्तरज्जुं कलिङ्गदेशाधिपतिं काश्यपगोत्रं प्रभवसंवत्सर माघशुद्ध
सप्तम्यां विशाखा नक्षत्रे जातं पितृ-प्रताप जय सौख्य पूजा होमादिकारकं रेणुकाम्बासमेतं
सिंहराश्याधिपं भानुवारप्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रहमण्डले प्रविष्टं
अस्मिन् अधिकरणे मध्ये वर्तुलाकारमण्डले गोधूमधान्योपरि सूर्यग्रहं ध्यायामि आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं हां हीं हौं सः सूर्यग्रहाय नमः ॥

आदित्य ग्रहस्य आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| १ - ओं कीर्त्यै नमः | ५ - ओं क्षान्त्यै नमः |
| २ - ओं लक्ष्म्यै नमः | ६ - ओं हंस्यै नमः |
| ३ - ओं धृत्यै नमः | ७ - ओं मेघायै नमः |
| ४ - ओं शान्त्यै नमः | ८ - ओं विद्यायै नमः |
- प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| १ - ओं खड्गाय नमः | ३ - ओं भुशुण्ड्यै नमः |
| २ - ओं धनुषे सशराय नमः | ४ - ओं परिघाय नमः |
- द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीयावरणम्

- | | |
|---------------------|------------------------|
| १ - ओं कान्त्यै नमः | ४ - ओं सन्नत्यै नमः |
| २ - ओं श्रियै नमः | ५ - ओं उत्कृष्ट्यै नमः |
| ३ - ओं हृष्ट्यै नमः | ६ - ओं ऋद्ध्यै नमः |
- तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तुरीयावरणम्

- | | |
|-------------------------|-------------------|
| १ - ओं इन्दुशेखर्यै नमः | ५ - ओं शङ्खाय नमः |
| २ - ओं सौम्यायै नमः | ६ - ओं चक्राय नमः |
| ३ - ओं पद्मिन्यै नमः | ७ - ओं हरये नमः |
| ४ - ओं हरिण्यै नमः | |
- चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः ।

पञ्चमावरणम्

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १ - ओं हयाय नमः | ५ - ओं महाहनवे नमः |
| २ - ओं देवाय नमः | ६ - ओं महारुद्राय नमः |
| ३ - ओं हराय नमः | ७ - ओं पर्वताय नमः |
| ४ - ओं पञ्चवक्राय नमः | |
- पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री सूर्य गायत्री

ओं भास्कराय विद्महे महद्युतिकराय धीमहि ।
तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ॥

अग्नि अधिदेवता रुद्रप्रत्यधिदेवता सहिताय पितृ-प्रताप जय सौख्य पूजा होमादिकारकाय रेणुकाम्बा समेताय सिंहराश्याधिपाय सूर्याय सपरिवाराय इदं न मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|----------------------------------|---|
| १ - ओं ह्रीं अरुणाय नमः | ११ - ओं ह्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः |
| २ - ओं ह्रीं शरण्याय नमः | १२ - ओं ह्रीं दशदिक् प्रकाशकाय नमः |
| ३ - ओं ह्रीं करुणारससिन्धवे नमः | १३ - ओं ह्रीं भक्तवश्याय नमः |
| ४ - ओं ह्रीं आदिभूताय नमः | १४ - ओं ह्रीं सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः |
| ५ - ओं ह्रीं अखिलागमवेदिने नमः | १५ - ओं ह्रीं जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः |
| ६ - ओं ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः | १६ - ओं ह्रीं आत्मरूपिणे नमः |
| ७ - ओं ह्रीं वसुप्रदाय नमः | १७ - ओं ह्रीं तेजोरूपाय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं वासुदेवाय नमः | १८ - ओं ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं उद्यत्किरणजालाय नमः | १९ - ओं ह्रीं सम्पत्कराय नमः |
| १०- ओं ह्रीं आर्तशरण्याय नमः | २० - ओं ह्रीं भक्तकोटि सौख्यप्रदाय नमः |

सूर्य ग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	अग्निः
२	प्रत्यधिदेवता	रुद्रः
३	स्थानम्	मध्यम्
४	कोणः	वृत्तम्
५	समिध्	अर्कः
६	धान्यम्	गोधूमः
७	रत्नम्	माणिक्यम्
८	देशः	कलिङ्गः
९	वाहनम्	सप्ताश्व रथः
१०	दिक्	प्राक्
११	नैवेद्यम्	गुडान्नम्
१२	शाखा	ऋक्
१३	पत्नी	रेणुकाम्बा
१४	गोत्रम्	काश्यप गोत्रम्
१५	वर्णः	रक्तः
१६	मन्त्रः	आसत्येन रजसा - अग्निं दूतं - येषामीशे

॥ अथ श्री सोमग्रह आराधन क्रमः ॥

सोमस्य अष्ट परिवार देवताः

- | | |
|--------------|---------------------------|
| १ - उड्वीशः | ५ - रोहिणीपतिः |
| २ - ओषधिपतिः | ६ - निशापतिः |
| ३ - सोमः | ७ - क्षीरोदार्याव सम्भूतः |
| ४ - निशाकरः | ८ - महालक्ष्मी सहोदरः |

अस्य श्री सोमग्रह महामन्त्रस्य । गौतम ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । सोमदेवतायै नमः - हृदि । रं बीजाय नमः - गुह्ये । सं शक्तये नमः - दक्षस्तने । ओं कीलकाय नमः - वामस्तने । न्यासे विनियोगः - सवङ्गि ॥

न्यासः

- | | | |
|--------------------------|-------------------------|-----------------------|
| सोमाय नमः | - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः | - हृदयाय नमः । |
| निशाकराय नमः | - तर्जनीभ्यां नमः | - शिरसे स्वाहा । |
| क्षीरोदार्यावसम्भवाय नमः | - मध्यमाभ्यां नमः | - शिखायै वषट् । |
| लक्ष्मीसहोदराय नमः | - अनामिकाभ्यां नमः | - कवचाय हुं । |
| तारकेशाय नमः | - कनिष्ठिकाभ्यां नमः | - नेत्रत्रयाय वौषट् । |
| सुधामूर्तये नमः | - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | - अस्त्राय फट् । |

- | | | | |
|-----------------------|-------------|-----------------------------|------------|
| १ - शशिने नमः | - शिरसि | १२ - शशंधराय नमः | - हृदि |
| २ - कलानिधये नमः | - ललाटे | १३ - रोहिणीशाय नमः | - गुह्ये |
| ३ - चन्द्रमसे नमः | - नेत्रयोः | १४ - महालक्ष्मी सहोदराय नमः | - नाभौ |
| ४ - कलात्मजाय नमः | - कर्णयोः | १५ - निशाकराय नमः | - कट्यां |
| ५ - पक्षकराय नमः | - नासिकयोः | १६ - उड्वीशाय नमः | - पृष्ठे |
| ६ - कुमुदबान्धवाय नमः | - मुखे | १७ - मैत्री निधये नमः | - ऊर्वोः |
| ७ - निशाकराय नमः | - जिह्वायां | १८ - मृगाङ्गाय नमः | - जान्वोः |
| ८ - सुधाकराय नमः | - कण्ठे | १९ - अमृताब्धिजाय नमः | - जङ्घयोः |
| ९ - सुधात्मजाय नमः | - स्कन्धयोः | २० - स्वप्रकाशाय नमः | - गुल्फयोः |
| १० - सोमाय नमः | - हस्तयोः | २१ - हिमकराय नमः | - पादयोः |
| ११ - ओषधीशाय नमः | - बाह्वोः | २२ - चन्द्राय नमः | - सवङ्गि |

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

गदाधर धरं देवं श्वेतवर्णं निशाकरं ।
ध्यायेदमृतसंभूतं सर्वकामफलप्रदम् ॥

चन्द्र मण्डलाराधनम्

अप् अधिदेवता गौरी प्रत्यधिदेवता सहितं चन्द्रग्रहं श्वेतवर्णं श्वेतगन्धं श्वेतपुष्पं श्वेतमाल्याम्बरधरं श्वेतच्छत्रध्वजरथ पताकादि शोभितं दिव्य रथं समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं दशाश्व रथवाहनं प्रत्यङ्मुखं द्विभुजं दण्डधरं यामुनदेशाधिपं आत्रेयगोत्रं नन्दनसंवत्सर कार्तिक शुद्ध चतुर्दश्यां कृत्तिका नक्षत्रे जातं मातृ भोजन स्वस्ति मनःप्रसाद कृषि सस्यादि कारकं अमृताम्बा समेतं कर्कराश्याधिपतिं इन्दुवासर प्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रह मण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्यस्य आग्नेय दिग्भागे समचतुरश्र मण्डले तण्डुलधान्यस्योपरि भगवन्तं चन्द्रग्रहं ध्यायामि आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं वं सं वं सः चन्द्रग्रहाय नमः ॥

सोमग्रहस्य आवरणपूजा

प्रथमावरणम्

- | | |
|---------------------------------|------------------------|
| १ - ओं शुचिस्मिताय नमः | ४ - ओं नीलवर्णायै नमः |
| २ - ओं महादंष्ट्रायै नमः | ५ - ओं खड्गहस्तायै नमः |
| ३ - ओं शुद्धस्फटिकसन्निभायै नमः | ६ - ओं चण्डिकायै नमः |
- अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| १ - ओं मन्त्रात्मकाय नमः | ३ - ओं शतध्वंसकराय नमः |
| २ - ओं यन्त्ररूपाय नमः | ४ - ओं इन्द्रनीलनिभाय नमः |
- अथ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीयावरणम्

- | | |
|------------------------|--------------------------|
| १ - ओं महापराय नमः | ४ - ओं तप्ताचामीकराय नमः |
| २ - ओं महादेवाय नमः | ५ - ओं शूलायुधकराय नमः |
| ३ - ओं महास्कन्धाय नमः | |
- अथ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तुरीयावरणम्

- | | |
|------------------------|---------------------|
| १ - ओं इन्द्राय नमः | ५ - ओं नियोजकाय नमः |
| २ - ओं पुण्ड्राय नमः | ६ - ओं महाशूराय नमः |
| ३ - ओं अरुणाय नमः | ७ - ओं कवये नमः |
| ४ - ओं सुप्रसन्नाय नमः | |
- अथ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः ।

पञ्चमावरणम्

- | | |
|------------------------|--------------------|
| १ - ओं गणेशाय नमः | ४ - ओं पद्मकाय नमः |
| २ - ओं लूकराय नमः | ५ - ओं पाशकाय नमः |
| ३ - ओं बीजापूरधराय नमः | |
- अथ पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः ।

षष्ठावरणम्

- | | |
|---------------------|---------------------------|
| १ - ओं शुकाय नमः | ५ - ओं उज्वलाय नमः |
| २ - ओं हैमजटाय नमः | ६ - ओं महाकालाय नमः |
| ३ - ओं हैमाय नमः | ७ - ओं कालाय नमः |
| ४ - ओं अमृतघटाय नमः | ८ - ओं अर्धनारीश्वराय नमः |
- अथ षष्ठावरण देवताभ्यो नमः ।

सप्तमावरणं

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| १ - ओं पृथिव्यै नमः | ४ - ओं योगेश्वर्यै नाः |
| २ - ओं लोकेश्वर्यै नमः | ५ - ओं परात्परायै नाः |
| ३ - ओं सन्ध्यै नमः | ६ - ओं फुल्लहस्तायै नमः |
- अथ सप्तमावरण देवताभ्यो नमः ।

चन्द्र गायत्री

ओं पद्मध्वजाय विद्महे हेमरूपाय धीमहि ।

तन्नः सोमः प्रचोदयात् ॥

ओं निशाकराय विद्महे सुधाहस्ताय धीमहि ।

तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ॥

अपू अधिदेवता गौरी प्रत्यधिदेवता सहिताय मातृ भोजन स्वस्ति मनःप्रसाद कृषि सस्यादि कारकाय अमृताम्बा समेताय कर्कराश्याधिपाय चन्द्रग्रहाय सपरिवाराय इदं न मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- १ - ओं ह्रीं श्रीमते नमः
 २ - ओं ह्रीं शशिधराय नमः
 ३ - ओं ह्रीं ताराधीशाय नमः
 ४ - ओं ह्रीं निशाकराय नमः
 ५ - ओं ह्रीं सुधा निधये नमः
 ६ - ओं ह्रीं साधुपूजिताय नमः
 ७ - ओं ह्रीं विदुषां पतये नमः
 ८ - ओं ह्रीं कष्टदारु कुठारकाय नमः
 ९ - ओं ह्रीं स्वप्रकाशाय नमः
 १० - ओं ह्रीं क्षयवृद्धि समन्विताय नमः
 ११ - ओं ह्रीं जयफलप्रदाय नमः
 १२ - ओं ह्रीं सुरस्वामिने नमः
 १३ - ओं ह्रीं भक्तानां इष्टदायकाय नमः
 १४ - ओं ह्रीं जगदानन्दकारणाय नमः
 १५ - ओं ह्रीं आत्रेयगोत्रजाय नमः
 १६ - ओं ह्रीं सनकादि मुनिस्तुताय नमः
 १७ - ओं ह्रीं रोहिणी पतये नमः
 १८ - ओं ह्रीं मृत्युसंहारकाय नमः
 १९ - ओं ह्रीं भवबन्ध विमोचनाय नमः
 २० - ओं ह्रीं नित्यानन्द फलप्रदाय नमः

सोमग्रह संबन्धि विशेष विषय षट्टिका

१	अधिदेवता	अप् (आपः)
२	प्रत्यधिदेवता	गौरी
३	स्थानम्	आग्नेयः
४	कोणः	चतुरश्रः
५	समिध्	पलाशः
६	धान्यम्	तण्डुलः
७	रत्नम्	मुक्ता
८	देशः	यामुनदेशः
९	अभिमुखम्	प्रत्यक्
१०	शाखा	साम शाखा
११	पत्नी	अमृताम्बा
१२	गोत्रम्	आत्रेय गोत्रम्
१३	वर्णः	श्वेतः
१४	वाहनम्	दशाश्व रथः
१५	नैवेद्यम्	घृत पायसम्
१६	मन्त्रः	आप्यायस्व- अप्सुमे सोमः-गौरीमिमाय

॥ अथ श्री अङ्गारकग्रह आराधन क्रमः ॥

भौमस्य एकविंशति परिवार देवताः

१ - मङ्गलः	१२ - कुजः
२ - भूमिपुत्रः	१३ - भौमः
३ - ऋणहर्तारः	१४ - भूमिदः
४ - धनप्रदः	१५ - भूमिनन्दः
५ - स्थिरासनः	१६ - अङ्गारकः
६ - महाकायः	१७ - यमः
७ - सर्वकर्माविरोकः	१८ - सर्वरोगापहारकः
८ - लोहितः	१९ - वृष्टिकर्तारः
९ - लोहिताक्षः	२० - वृष्टिहर्तारः
१० - सामशाखाधिनायकः	२१ - सर्वकर्मफलप्रदः
११ - धरात्मजः	

अस्य श्री अङ्गारकग्रह महामन्त्रस्य । विरूपाक्ष ऋषये नमः - शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः- मुखे । अङ्गारक देवतायै नमः - हृदि । अं बीजाय नमः - गुह्ये । गं शक्तये नमः - दक्षस्तने । रं कीलकाय नमः - वामस्तने । न्यासे विनियोगः - सवाङ्गि ॥

न्यासः

अङ्गारकाय	- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	- हृदयाय नमः ।
धरणीसुताय	- तर्जनीभ्यां नमः	- शिरसे स्वाहा ।
रक्तवाससे	- मध्यमाभ्यां नमः	- शिखायै वषट् ।
रक्तलोचनाय	- अनामिकाभ्यां नमः	- कवचाय हुं ।
शक्तिधराय	- कनिष्ठिकाभ्यां नमः	- नेत्रत्रयाय वौषट् ।
कर्मभावनाय	- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	- अस्त्राय फट् ।

१ - अङ्गारकाय नमः - शिरसि	९ - चतुर्भुजाय नमः - हृदये
२ - धरणीसुताय नमः - मुखे	१० - रोगापहारकाय नमः - कुक्षौ
३ - रक्ताम्बराय नमः - कर्णयोः	११ - भूभुजाय नमः - कट्यां
४ - रक्तलोचनाय नमः - नेत्रयोः	१२ - गदाधराय नमः - ऊर्वोः
५ - शक्तिधराय नमः - नासिकयोः	१३ - कुजाय नमः - जान्वोः
६ - भौमकाय नमः - कण्ठे	१४ - भौमाय नमः - पादयोः
७ - रक्तमालिने नमः - भुजयोः	१५ - मेषवाहनाय नमः - सर्वाङ्गि
८ - शूलधराय नमः - हस्तयोः	भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

रक्तमाल्याम्बरधरं हेमरूपं चतुर्भुजम् ।
शक्तिरूपं गदा पद्मं धारयन्तं कराम्बुजैः ॥

श्री अङ्गारक मण्डलाराधनम्

पृथ्वी अधिदेवता स्कन्द प्रत्यधिदेवता सहितं अङ्गारकग्रहं रक्तवर्णं रक्तगन्धं रक्तपुष्पं रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तच्छत्र ध्वजरथ पताकादि शोभितं दिव्य रथं समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं मेषवाहनं दक्षिणाभिमुखं चतुर्भुजं गदाशूलशक्तिधरं अवन्तीदेशाधिपतिं भारद्वाजगोत्रं अक्षय संवत्सर भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां पूर्वफल्गुनी नक्षत्रे जातं मही भू सोदर रण ज्ञाति बल रत्न धन स्वर्णादि कारकं जयन्त्यम्बा समेतं मेषवृश्चिक राश्याधिपं भौमवासरप्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रह मण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्यग्रहस्य दक्षिण दिग्भागे त्रिकोणाकार मण्डले आढकधान्यस्योपरि भगवन्तं अङ्गारकग्रहं ध्यायामि आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं क्रां क्रीं क्रौं सः अङ्गारकग्रहाय नमः ॥

अङ्गारकग्रहस्य आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

१ - ओं आग्नेये नमः	४ - ओं गरुडाय नमः
२ - ओं निऋतये नमः	५ - ओं महावायवे नमः
३ - ओं वरुणाय नमः	६ - ओं महाताक्षर्याय नमः

अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| १ - ओं शङ्खाय नमः | ५ - ओं पर्जन्याय नमः |
| २ - ओं डमरुकाय नमः | ६ - ओं कालकालाय नमः |
| ३ - ओं कपालिने नमः | ७ - ओं चतुर्मुखाय नमः |
| ४ - ओं वरदाय नमः | |
- अथ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीयावरणम्

- | | |
|------------------------|-----------------------------|
| १ - ओं पञ्चमूर्तये नमः | ४ - ओं विनतासुताय नमः |
| २ - ओं नृसिंहाय नमः | ५ - ओं सर्वविघ्नेश्वराय नमः |
| ३ - ओं व्याघ्राय नमः | |
- अथ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री अङ्गारक गायत्री

ओं अङ्गारकाय विद्महे रक्तवर्णाय धीमहि ।

तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

ओं वीरध्वजाय विद्महे विघ्नहस्ताय धीमहि ।

तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

पृथ्वी अधिदेवता स्कन्द प्रत्यधिदेवता मही भू सोदर रण ज्ञाति बल रत्न धन स्वर्णादि कारकाय जयन्त्यम्बा समेताय मेषवृश्चिक राश्याधिपाय अङ्गारकाय सपरिवाराय इदं न मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नमावलिः ॥

- | | |
|-------------------------------------|--|
| १ - ओं ह्रीं महीसुताय नमः | ११ - ओं ह्रीं विरूपाक्षाय नमः |
| २ - ओं ह्रीं मङ्गलप्रदाय नमः | १२ - ओं ह्रीं नक्षत्रचक्रसञ्चारिणे नमः |
| ३ - ओं ह्रीं महावीराय नमः | १३ - ओं ह्रीं कनत्कनकभूषणाय नमः |
| ४ - ओं ह्रीं महाबलपराक्रमाय नमः | १४ - ओं ह्रीं भक्ताभय वरप्रदाय नमः |
| ५ - ओं ह्रीं महारौद्राय नमः | १५ - ओं ह्रीं सर्वकष्टनिवारकाय नमः |
| ६ - ओं ह्रीं दयाकराय नमः | १६ - ओं ह्रीं दुष्टगर्वविमोचनाय नमः |
| ७ - ओं ह्रीं ताप पाप विवर्जिताय नमः | १७ - ओं ह्रीं भक्तपालनतत्पराय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं सुब्रह्मण्याय नमः | १८ - ओं ह्रीं भव्यफलप्रदाय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं वरदाय नमः | १९ - ओं ह्रीं शस्त्रविद्याविशारदाय नमः |
| १० - ओं ह्रीं वीरभद्राय नमः | २० - ओं ह्रीं सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः |

अङ्गारक ग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	पृथ्वी
२	प्रत्यधिदेवता	स्कन्दः
३	स्थानम्	दक्षिणस्थानम्
४	कोणः	त्रिकोणम्
५	समिधू	खादिरः
६	धान्यम्	आढकम्
७	रत्नम्	प्रवालम्
८	देशः	अवन्ती
९	अभिमुखम्	दक्षिणाभिमुखम्
१०	शाखा	साम शाखा
११	पत्नी	जयन्त्यम्बा
१२	गोत्रम्	भारद्वाज गोत्रम्
१३	वर्णः	रक्तः
१४	वाहनम्	मेषः
१५	नैवेद्यम्	हविष्यन्नम्
१६	मन्त्रः	अग्निमूर्धा-स्योनापृथिवी

॥ अथ श्री बुधग्रह आराधन क्रमः ॥

बुधस्य अष्टपरिवार देवताः

१ - बुधः	५ - चतुर्भुजः
२ - सौम्यः	६ - दण्डधारिणः
३ - रौहिणेयः	७ - गदाहस्तः
४ - सिम्हवाहः	८ - पीताम्बरः

अस्य श्री बुधग्रह महामन्त्रस्य । काश्यप ऋषये नमः - शिरसि । त्रिष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । बुध देवतायै नमः - हृदि । यं बीजाय नमः - गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । ऊं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवङ्गि ॥

न्यासः

बुधाय नमः	- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	- हृदयाय नमः ।
सौम्याय नमः	- तर्जनीभ्यां नमः	- शिरसे स्वाहा ।
सिम्हारूढाय नमः	- मध्यमाभ्यां नमः	- शिखायै वषट् ।
चतुर्बाहवे नमः	- अनामिकाभ्यां नमः	- कवचाय हुं ।
गदाधराय नमः	- कनिष्ठिकाभ्यां नमः	- नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सोमपुत्राय नमः	- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	- अस्त्राय फट् ।

१ - बुधाय नमः	- शिरसि	८ - खगेश्वराय नमः	- नाभौ
२ - सौम्याय नमः	- ललाटे	९ - कालात्मजाय नमः	- पृष्ठे
३ - ज्ञानमयाय नमः	- नेत्रयोः	१० - सुरेश्वराय नमः	- ऊर्वोः
४ - शशीसुताय नमः	- कर्णयोः	११ - रोहिणी सूनवे नमः	- जान्वोः
५ - गन्दधराय नमः	- नासिकयोः	१२ - फलप्रदाय नमः	- जंघयोः
६ - पुस्तकभूषिताय नमः	- हस्तयोः	१३ - बाणासनाय नमः	- पादयोः
७ - सुराराध्याय नमः	- कट्यां	१४ - सत्यवासाय नमः	- सवङ्गि ।

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

सिम्हारूढं चतुर्बाहुं खड्गचर्म गदाधरम् ।
सोमपुत्रं महासौम्यं ध्यायेत् सर्वार्थसिद्धिदम् ॥

बुध मण्डलाराधनम्

विष्णु अधिदेवता नारायण प्रत्यधिदेवता सहितं बुधग्रहं पीतवर्णं पीतपुष्पं पीतमाल्याम्बरधरं पीतच्छत्रध्वर रथ पताकादि शोभितं दिव्यरथ समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं सिंहवाहनं उदङ्मुखं मगधदेशाधिपतिं चतुर्भुजं खड्ग चर्मांबरधरं आत्रेयगोत्रं सौम्यसंवत्सर वैशाख शुक्लएकादश्यां उत्तर फल्गुनी नक्षत्रे जातं मातुल भागिनेय बान्धव पाण्डित्य कलानैपुण्य शिल्प चातुर्य सत्य यागादि कारकं गिरिजाम्बा समेतं कन्या मिथुन राश्याधिपतिं सौम्यवार प्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रह मण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्यग्रहस्य ऐशान्य दिग्भागे बाणाकार मण्डले मुद्ग धान्यस्योपरि भगवन्तं बुधग्रहं ध्यायामि आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ॥

बुधग्रहस्य आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| १ - ओं ह्रीं अचलाय नमः | ४ - ओं ह्रीं कुम्भाय नमः |
| २ - ओं ह्रीं पिङ्गलाय नमः | ५ - ओं ह्रीं बिन्दवे नमः |
| ३ - ओं ह्रीं श्वेताय नमः | ६ - ओं ह्रीं नीलमुखाय नमः |
- अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- १ - ओं ह्रीं पोषकाय नमः
 २ - ओं ह्रीं प्लावकाय नमः
 ३ - ओं ह्रीं भासकाय नमः
 अथ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री बुध गायत्री

ओं गजध्वजाय विद्महे खड्ग हस्ताय धीमहि ।

तन्नो बुधः प्रचोदयात् ।

ओं रौहिणेयाय विद्महे चन्द्र पुत्राय धीमहि ।

तन्नः सौम्यः प्रचोदयात् ॥

विष्णु अधिदेवता नारायण प्रत्यधिदेवता सहिताय मातुल भागिनेय बान्धव पाण्डित्य कलानैपुण्य शिल्प चातुर्य सत्य यागादि कारकाय गिरिजाम्बा समेताय सपरिवाराय बुधाय इदं नमः । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|--|---------------------------------------|
| १ - ओं ह्रीं बुधग्रहाय नमः | ११ - ओं ह्रीं सर्वरोगप्रशमनाय नमः |
| २ - ओं ह्रीं शुभप्रदाय नमः | १२ - ओं ह्रीं सर्वमृत्यु निवारकाय नमः |
| ३ - ओं ह्रीं श्रेयसां पतये नमः | १३ - ओं ह्रीं विद्वद्जन मनोहराय नमः |
| ४ - ओं ह्रीं सोमवंश प्रदीपाय नमः | १४ - ओं ह्रीं सिंहादिरूढाय नमः |
| ५ - ओं ह्रीं वेदतत्त्वज्ञाय नमः | १५ - ओं ह्रीं आत्रेयगोत्रजाय नमः |
| ६ - ओं ह्रीं वेदान्तज्ञान भास्कराय नमः | १६ - ओं ह्रीं बन्धुप्रियाय नमः |
| ७ - ओं ह्रीं विश्वानुकूलसञ्चारिणे नमः | १७ - ओं ह्रीं प्रियभाषणाय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं विविधागम सारज्ञाय नमः | १८ - ओं ह्रीं विशुद्ध कनकप्रदाय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं त्रिवर्ग फलप्रदाय नमः | १९ - ओं ह्रीं सकलकामप्रदाय नमः |
| १० - ओं ह्रीं सत्यसङ्कल्पाय नमः | २० - ओं ह्रीं विश्वपावनाय नमः |

बुध ग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	विष्णुः
२	प्रत्यधिदेवता	नारायणः
३	स्थानम्	ऐशान्यम्
४	कोणः	बाणाकारः
५	समिधु	अपामार्गः
६	धान्यम्	मुद्गः
७	रत्नम्	मरकतम्
८	देशः	मगध देशः
९	अभिमुखम्	उदङ्मुखम्
१०	शाखा	अथर्व शाखा
११	पत्नी	गिरिजाम्बा
१२	गोत्रम्	आत्रेय गोत्रम्
१३	वर्णः	पीतः
१४	वाहनम्	सिंहः
१५	नैवेद्यम्	क्षीरान्नम्
१६	मन्त्रः	उद्धृद्यस्वाग्ने-इदं विष्णुः - विष्णोः

॥ अथ श्री गुरुग्रह आराधन क्रमः ॥

गुरोः अष्ट परिवार देवताः

१ - सुराचार्यः	५ - आङ्गीरसः
२ - जीवसंज्ञः	६ - वाग्पतिः
३ - ऋग्वेदाधिपतिः	७ - द्विजेन्द्रः
४ - गुरुः	८ - सुरवन्दितः

अस्य श्री बृहस्पतिग्रह महामन्त्रस्य । ईश्वर ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । बृहस्पति देवतायै नमः - हृदि । अं बीजाय नमः - गुह्ये । श्रीं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । क्लीं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवाङ्गि ॥

न्यासः

बृहस्पतये नमः	- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	- हृदयाय नमः ।
वाक्पतये नमः	- तर्जनीभ्यां नमः	- शिरसे स्वाहा ।
गीर्वाणवन्दिताय नमः	- मध्यमाभ्यां नमः	- शिखायै वषट् ।
वरदाय नमः	- अनामिकाभ्यां नमः	- कवचाय हुं ।
सुराचार्याय नमः	- कनिष्ठिकाभ्यां नमः	- नेत्रत्रयाय वौषट् ।
कमण्डलुधराय नमः	- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	- अस्त्राय फट् ।

१ - बृहस्पतये नमः	- शिरसि	१० - गीष्पतये नमः	- स्कन्धयोः
२ - गुरवे नमः	- ललाटे	११ - वागीश्वराय नमः	- स्तनयोः
३ - सुरगुरवे नमः	- कर्णयोः	१२ - शुभलक्षणाय नमः	- कुक्षौ
४ - अभीष्टदायकाय नमः	- नेत्रयोः	१३ - नीतिज्ञाय नमः	- नाभौ
५ - सुराचार्याय नमः	- नासिकयोः	१४ - सर्वदाय नमः	- कट्यां
६ - वेदपारकाय नमः	- जिह्वायां	१५ - पुण्यात्मजाय नमः	- ऊर्वोः
७ - सर्वज्ञाय नमः	- मुखे	१६ - ज्ञानदाय नमः	- जङ्घयोः
८ - शुभप्रदाय नमः	- भुजयोः	१७ - विश्वात्मने नमः	- पादयोः
९ - वज्रधराय नमः	- करयोः	१८ - अध्वरासक्ताय नमः	- सवाङ्गि

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

॥ अथ शुक्रग्रह आराधन क्रमः ॥

शुक्रग्रहस्य अष्ट परिवार देवताः

१ - भृगुः	५ - दैत्यामात्यः
२ - शुक्रः	६ - भार्गवः
३ - असुरेशः	७ - शुक्रदेवोद्भवः
४ - यजुर्वेदाधिपः	८ - दिवादर्शनसम्पन्नः

अस्य श्री शुक्रग्रह महामन्त्रस्य । भरद्वाज ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । शुक्र देवतायै नमः - हृदि । कं बीजाय नमः - गुह्ये । गं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । वं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवाङ्गि ॥

न्यासः

दानवपूजिताय	- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	- हृदयाय नमः ।
दैत्याचार्याय	- तर्जनीभ्यां नमः	- शिरसे स्वाहा ।
वरदाय	- मध्यमाभ्यां नमः	- शिखायै वषट् ।
श्वेतवस्त्राय	- अनामिकाभ्यां नमः	- कवचाय हुं ।
शुक्राय	- कनिष्ठिकाभ्यां नमः	- नेत्रत्रयाय वौषट् ।
कमण्डलुधराय	- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	- अस्त्राय फट् ।

१ - भार्गवाय नमः	- शिरसि ।	१० - योगविदाम्बराय नमः	- वक्षस्थले
२ - गृहाधिपाय नमः	- ललाटे	११ - नीतिकर्त्रे नमः	- कुक्षौ
३ - दैत्यगुरवे नमः	- नेत्रयोः	१२ - विश्वात्मने नमः	- कट्यां
४ - श्रीचन्दनद्युतये नमः	- कर्णयोः	१३ - भृगवे नमः	- जान्वोः
५ - काव्याय नमः	- नासिकयोः	१४ - महताम्बराय नमः	- जङ्घयोः
६ - दैत्यवन्दिताय नमः	- मुखे	१५ - गुणनिधये नमः	- गुल्फयोः
७ - तेजोनिधये नमः	- जिह्वायां	१६ - पाण्डराम्बराय नमः	- पादयोः
८ - श्रीकण्ठ भक्तिमते नमः	- कण्ठे	१७ - शुक्राय नमः	- सवाङ्गि ।
९ - अक्षमालाधराय नमः	- भुजयोः	। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।	

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|-------------------------------------|---------------------------------------|
| १ - ओं ह्रीं परमगुरवे नमः | ११ - ओं ह्रीं दारिद्र्य नाशकाय नमः |
| २ - ओं ह्रीं गुणवराय नमः | १२ - ओं ह्रीं धनुर्मीनाधिपाय नमः |
| ३ - ओं ह्रीं गुरूणां गुरवे नमः | १३ - ओं ह्रीं सर्वांगमज्ञाय नमः |
| ४ - ओं ह्रीं अध्वरपतये नमः | १४ - ओं ह्रीं सर्ववेदान्तविद्वराय नमः |
| ५ - ओं ह्रीं वाचस्पतये नमः | १५ - ओं ह्रीं सत्यभाषणाय नमः |
| ६ - ओं ह्रीं वशिने नमः | १६ - ओं ह्रीं सुरेन्द्रवन्द्याय नमः |
| ७ - ओं ह्रीं बृहद्भानवे नमः | १७ - ओं ह्रीं वेदसिद्धान्तपारगाय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं सुरकार्य हितङ्कराय नमः | १८ - ओं ह्रीं सदानन्दाय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं गीर्वाण पोषकाय नमः | १९ - ओं ह्रीं अभीष्टफलप्रदाय नमः |
| १० - ओं ह्रीं दयासागराय नमः | |

गुरुग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका

१	अधिदेवता	इन्द्रमरुत्व
२	प्रत्यधिदेवता	ब्रह्मा
३	स्थानम्	उत्तरम्
४	कोणः	दीर्घचतुरश्रः
५	समिधू	अश्वत्थः
६	धान्यम्	चणकः
७	रत्नम्	पुष्यरागः
८	देशः	सिन्धुद्वीपम्
९	अभिमुखम्	उत्तरम्
१०	शाखा	यजुः शाखा
११	पत्नी	शक्त्यम्बा
१२	गोत्रम्	आङ्गीरस गोत्रम्
१३	वर्णः	स्वर्णम्
१४	वाहनम्	पद्मम्
१५	नैवेद्यम्	दध्यन्नम्
१६	मन्त्रः	बृहस्पते - इन्द्रमरुत्व-ब्रह्मजज्ञानं

तुरीयावरणम्

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| १ - ओं युद्धोन्मत्ताय नमः | ४ - ओं चण्डरुद्राय नमः |
| २ - ओं मत्ताय नमः | ५ - ओं महाभीमाय नमः |
| ३ - ओं पद्मद्वयधराय नमः | ६ - ओं पोत्रिरूपाय नमः |
- अथ चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री शुक्र गायत्री

ओं अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि ।
तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।

ओं भार्गवाय विद्महे विद्याधीशाय धीमहि ।
तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

इन्द्राण्यधिदेवता इन्द्रप्रत्यधिदेवता सहिताय सुख भार्या गन्ध आभरण शय्या गृह
वाहन कवितादिकारकाय प्रसन्नाम्बा समेताय वृषभतुलाराश्याधिपाय शुक्रग्रहाय इदं न मम ।
इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|---------------------------------------|---------------------------------------|
| १ - ओं ह्रीं असुरगुरवे नमः | ११ - ओं ह्रीं सर्वावगुणवर्जिताय नमः |
| २ - ओं ह्रीं शुभगुणाय नमः | १२ - ओं ह्रीं सकलागमपारगाय नमः |
| ३ - ओं ह्रीं शोभनाक्षाय नमः | १३ - ओं ह्रीं मनस्विने नमः |
| ४ - ओं ह्रीं शुद्धस्फटिक भास्कराय नमः | १४ - ओं ह्रीं मायातीताय नमः |
| ५ - ओं ह्रीं दीनार्तहराय नमः | १५ - ओं ह्रीं महाशयाय नमः |
| ६ - ओं ह्रीं देवाभिनन्दिताय नमः | १६ - ओं ह्रीं कारुण्यरससम्पूर्णाय नमः |
| ७ - ओं ह्रीं कल्याणदायकाय नमः | १७ - ओं ह्रीं कल्याणगुणवर्धनाय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं भक्तपालनतत्पराय नमः | १८ - ओं ह्रीं आधिव्याधि हराय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय नमः | १९ - ओं ह्रीं धर्मपालकाय नमः |
| १० - ओं ह्रीं निखिलशास्त्रज्ञाय नमः | २० - ओं ह्रीं सर्वैश्वर्य प्रदाय नमः |

ध्यानम्

जटिलं चाक्षसूत्रं च वरदण्डकमण्डलुं ।
श्वेतवस्त्रावृतं शुक्रं ध्यायेत् दानवपूजितम् ॥

श्री शुक्रग्रह मण्डलाराधनम्

इन्द्राण्यधिदेवता इन्द्रप्रत्यधिदेवता सहितं शुक्रग्रहं श्वेतवर्णं श्वेतपुष्पं श्वेतगन्धं श्वेतमाल्याम्बरधरं श्वेतच्छत्रध्वजरथ पताकादि शोभितं दिव्य रथ समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं पूर्वाभिमुखं पद्मासनस्थं चतुर्भुजं दण्डाक्षमाला जटावल्करधारिणं काम्भोजदेशाधिपतिं भार्गव गोत्रं मन्मथ संवत्सर दशम्यां पुष्य नक्षत्रे जातं सुख भार्या गन्ध आभरण शय्या गृह वाहन कवितादिकारकं प्रसन्नांबा समेतं वृषभतुलाराश्याधिपं भृगुवार प्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रहमण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्यग्रहस्य प्राग्भागे पञ्चकोणाकार मण्डले राजमाषधान्यस्योपरि शुक्रग्रहं ध्यायामि । आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं ह्रां ह्रीं ह्रौं सः शुक्राय नमः ॥

शुक्रग्रहस्य आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

- १ - ओं महारुद्राय नमः
 - २ - ओं महेशान्यै नमः
 - ३ - ओं महा योगेश्वराय नमः
- अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १ - ओं वैष्णवाय नमः | ४ - ओं भुजगाय नमः |
| २ - ओं वामनाय नमः | ५ - ओं अक्षसूत्रधराय नमः |
| ३ - ओं श्यामलाय नमः | |
- अथ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ॥

तृतीयावरणम्

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| १ - ओं मुण्डिन्यै नमः | ३ - ओं विमलायै नमः |
| २ - ओं मोहिन्यै नमः | ४ - ओं अरुणिकायै नमः |
- अथ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

॥ अथ श्री शनैश्वरग्रह आराधन क्रमः ॥

मन्दस्य द्वादश परिवार देवताः

१ - कोणः	७ - पातङ्गिः
२ - शनैश्वरः	८ - ग्रहनायकः
३ - मन्दः	९ - ब्रह्मण्यः
४ - छायाहृदय नन्दनः	१० - क्रूरकर्माणः
५ - मार्ताण्डः	११ - नीलवस्त्रः
६ - सौरिः	१२ - अञ्जनद्युतिः

अस्य श्री शनैश्वर ग्रह महामन्त्रस्य । काश्यप ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । शनैश्वर देवतायै नमः - हृदि । शं बीजाय नमः - गुह्ये । वां शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । यं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवङ्गि ॥

न्यासः

शनैश्वराय नमः	- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	- हृदयाय नमः ।
मन्दगतये नमः	- तर्जनीभ्यां नमः	- शिरसे स्वाहा ।
अधोक्षजाय नमः	- मध्यमाभ्यां नमः	- शिखायै वषट् ।
सौरये नमः	- अनामिकाभ्यां नमः	- कवचाय हुं ।
अभयङ्कराय नमः	- कनिष्ठिकाभ्यां नमः	- नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ऊर्ध्वरोम्णे नमः	- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	- अस्त्राय फट् ।

१ - शनैश्वराय नमः	- शिरसि	१० - शुष्कोदराय नमः	- कुक्षौ
२ - भक्तार्तिनाशनाय नमः	- मुखे	११ - विकटाय नमः	- कट्यां
३ - कृष्णाम्बराय नमः	- कर्णयोः	१२ - घोररूपाय नमः	- ऊर्वोः
४ - सर्वभयङ्कराय नमः	- नेत्रयोः	१३ - दीर्घाय नमः	- जान्वोः
५ - कृष्णाङ्गाय नमः	- नासिकयोः	१४ - मङ्गलप्रदाय	- जङ्घयोः
६ - शिखण्डिजाय नमः	- कण्ठे	१५ - गुणकराय नमः	- गुल्फयोः
७ - सुभुजाय नमः	- भुजयोः	१६ - पङ्गुपादकाय नमः	- पादयोः
८ - नीलोत्पलप्रभाय नमः	- हस्तयोः	१७ - भास्करनन्दनाय नमः	- सवङ्गि ।
९ - कृष्णाय नमः	- हृदि	भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।	

शुक्रग्रह ग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	इन्द्राणी
२	प्रत्यधिदेवता	इन्द्रः
३	स्थानम्	प्राक्
४	कोणः	पञ्चकोणम्
५	समिधू	उदुम्बरः
६	धान्यम्	राजमाषः
७	रत्नम्	पन्ना
८	देशः	काम्भोज देशः
९	अभिमुखम्	पूर्वाभिमुखम्
१०	शाखा	यजुः शाखा
११	पत्नी	प्रसन्नाम्बा
१२	गोत्रम्	भार्गव गोत्रम्
१३	वर्णः	श्वेतः
१४	वाहनम्	पद्मम्
१५	नैवेद्यम्	घृतान्नम्
१६	मन्त्रः	प्रवःशुक्राय - इन्द्राणी इन्द्रं वो विश्वतः

तृतीयावरणम्

- १- ओं कृष्णवर्णायै नमः
- २- ओं भीमनादायै नमः
- ३- ओं कल्पान्तायै नमः
- ४- ओं भैरव्यै नमः

अथ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

तुरीयावरणम्

- १- ओं कल्पायै नमः
- २- ओं श्रियै नमः
- ३- ओं कोणगायै नमः

अथ तुरीयावरण देवताभ्यो नमः ।

पञ्चमावरणम्

- १- ओं वारणायै नमः
- २- ओं श्यामलाङ्गायै नमः
- ३- ओं ज्वलत्सन्निभायै नमः
- ४- ओं धूम्रायै नमः

अथ पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः ।

षष्ठावरणम्

- १- ओं कान्त्यै नमः
- २- ओं चन्द्रनायै नमः
- ३- ओं प्रतापिन्यै नमः
- ४- ओं भटनायिकायै नमः

अथ षष्ठावरण देवताभ्यो नमः ।

सप्तमावरणम्

- १- ओं वज्रेश्यै नमः
- २- ओं बन्धुकायै नमः
- ३- ओं योगायै नमः

अथ सप्तमावरण देवताभ्यो नमः ।

५- ओं सुरेश्यै नमः

६- ओं योगरूपायै नमः

७- ओं भगेश्यै नमः

४- ओं विश्वव्याप्त्यै नमः

५- ओं सनातन्यै नमः

५- ओं पारिजातायै नमः

६- ओं महेन्द्रायै नमः

७- ओं गरुडायै नमः

५- ओं देवसेनायै नमः

६- ओं साधनायै नमः

७- ओं शङ्कर्यै नमः

४- ओं किल्किटायै नमः

५- ओं पुरुषायै नमः

६- ओं केकिन्यै नमः

ध्यानम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रास करो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजस्सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरदः प्रसन्नः ॥

श्री शनैश्वरग्रह मण्डलाराधनम्

प्रजापति अधिदेवता यम प्रत्यधिदेवता सहितं शनैश्वरग्रहं नीलवर्णं नीलपुष्पं नीलमाल्याम्बरधरं नीलच्छत्रध्वजरथ पताकादि शोभितं दिव्यरथ समारूढं मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वाणं चापासनस्थं प्रत्यङ्मुखं गृध्ररथं चतुर्भुजं शूलायुधधरं सौराष्ट्रदेशाधिपतिं काश्यप गोत्रं विकारि संवत्सर नवम्यां रोहिणी नक्षत्रे जातं निन्दा अपवाद दारिद्र्य आशौच ऋण कारागृहादि कारकोऽपि निज भक्तानां क्षेमङ्करं कृष्णाम्बा समेतं मकरकुम्भ राश्याधिपतिं मन्दवारप्रयुक्तं किरीटिनं सुखासीनं पत्नी पुत्र परिवार समेतं ग्रह मण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्य ग्रहस्य पश्चिम दिग्भागे धनुराकारमण्डले तिलधान्यस्योपरि भगवन्तं शनैश्वरग्रहं ध्यायामि । आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं प्रां प्रीं प्रौं सः मन्दाय नमः ॥

शनैश्वरग्रह आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १ - ओं आधान्त्यै नमः | ४ - ओं रौद्रायै नमः |
| २ - ओं मुण्डिन्यै नमः | ५ - ओं एकक्ष्यै नमः |
| ३ - ओं क्रूरायै नमः | ६ - ओं शूर्पकणायै नमः |
- अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| १ - ओं वरदायै नमः | ५ - ओं बीजाक्षर्यै नमः |
| २ - ओं मन्त्रिण्यै नमः | ६ - ओं महालक्ष्म्यै नमः |
| ३ - ओं कूष्माण्डायै नमः | ७ - ओं भार्गव्यै नमः |
| ४ - ओं कलिकायै नमः | |
- अथ द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः ।

शनैश्चरग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	प्रजापतिः
२	प्रत्यधिदेवता	यमः
३	स्थानम्	पश्चिमस्थानम्
४	कोणः	धनुराकारः
५	समिध्	शमी
६	धान्यम्	तिलः
७	रत्नम्	नीलम्
८	देशः	सौराष्ट्रः
९	अभिमुखम्	प्रत्यङ्मुखम्
१०	शाखा	ऋक्
११	पत्नी	कृष्णाम्बा
१२	गोत्रम्	काश्यप गोत्रम्
१३	वर्णः	नीलः
१४	वाहनम्	कृष्णसिंहः
१५	नैवेद्यम्	तिलान्नम्
१६	मन्त्रः	शन्नो देवी प्रजापते इयं यम

अष्टमावरणम्

- १- ओं महालोकाय नमः ४- ओं श्रीकान्तायै नमः
 २- ओं सावित्र्यै नमः ५- ओं मदनायै नमः
 ३- ओं ब्रह्मरूपिण्यै नमः ६- ओं महामार्यै नमः
 अथ अष्टमावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री शनि गायत्री

ओं काकध्वजाय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि ।
 तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥

ओं शनैश्वराय विद्महे छायापुत्राय धीमहि ।
 तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ॥

प्रजापति अधिदेवता यम प्रत्यधिदेवता सहिताय निन्दा अपवाद दारिद्र्य आशौच ऋण कारागृहादि कारकोऽपि निजभक्ताजनानां क्षेमङ्कराय कृष्णाम्बा समेताय मकरकुम्भ राश्याधिपाय शनैश्वराय इदं न मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|-------------------------------------|---|
| १- ओं ह्रीं शनैश्वराय नमः | १२- ओं ह्रीं विश्ववन्द्याय नमः |
| २- ओं ह्रीं सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः | १३- ओं ह्रीं अविद्यामूलनाशनाय नमः |
| ३- ओं ह्रीं शरण्याय नमः | १४- ओं ह्रीं आयुष्यकारणाय नमः |
| ४- ओं ह्रीं सुरलोकविहारिणे नमः | १५- ओं ह्रीं विविधागमवेदिने नमः |
| ५- ओं ह्रीं महनीयगुणात्मने नमः | १६- ओं ह्रीं स्तोत्रगम्याय नमः |
| ६- ओं ह्रीं मर्त्यपावनपादाय नमः | १७- ओं ह्रीं अशेषजनवन्द्याय नमः |
| ७- ओं ह्रीं नीलवर्णाय नमः | १८- ओं ह्रीं विशेषफलदायिने नमः |
| ८- ओं ह्रीं नीलाञ्जन निभाय नमः | १९- ओं ह्रीं पशूनां पतये नमः |
| ९- ओं ह्रीं नीलाम्बर विभूषणाय नमः | २०- ओं ह्रीं आर्यगणस्तुत्याय नमः |
| १०- ओं ह्रीं वेदवेद्याय नमः | २१- ओं ह्रीं दीनार्तिहरणाय नमः |
| ११- ओं ह्रीं वीररोगभयाय नमः | २२- ओं ह्रीं भक्तसङ्घमनोभीष्ट फलदाय नमः |

श्री राहुग्रह मण्डलाराधनम्

सर्प अधिदेवता निर्ऋति प्रत्यधिदेवता सहितं राहुग्रहं नीलवर्णं नीलगन्धं नीलपुष्पं नीलमाल्याम्बरधरं नीलच्छत्र ध्वज रथ पताकादि शोभितं दिव्य रथ समारूढं मेरुं अप्रदक्षिणी कुर्वाणं सिंहासनं दक्षिणाभिमुखं शूर्पासनस्थं चतुर्भुजं कराळवक्रं खड्गचर्मवरकरं पैठीनस गोत्रं बर्बरदेशाधिपतिं किरीटिनं सुखासीनं शक्ति पत्नी पुत्र परिवार समेतं अशन शयन योग भोग सुख पितामह कारकं मायाम्बा समेतं शनिपार्श्ववर्तिनि कुम्भराश्याधिपं ग्रह मण्डले प्रविष्टं अस्मिन् अधिकरणे सूर्यमण्डलस्य नैर्ऋति दिग्भागे शूर्पाकार मण्डले माषधान्यस्योपरि भगवन्तं राहुग्रहं ध्यायामि । आवाहयामि ॥

मूल मन्त्रः

ओं सां सीं सौं सः राहवे नमः ॥

राहुग्रह आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

- | | |
|------------------------|---------------------------------|
| १ - ओं महाशान्त्यै नमः | ३ - ओं सुधारूपायै नमः |
| २ - ओं शुभकर्यै नमः | ४ - ओं ज्वराद्यखिलरोगघ्न्यै नमः |
- अथ प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयावरणम्

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| १ - ओं पद्माय नमः | ४ - ओं वासुकये नमः |
| २ - ओं शङ्खाय नमः | ५ - ओं मकराय नमः |
| ३ - ओं तक्षकाय नमः | ६ - ओं मात्स्यकाय नमः |
- अथ द्वितीयवरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीयावरणम्

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| १ - ओं त्र्यम्बकाय नमः | ४ - ओं यशस्विन्यै नमः |
| २ - ओं नादिन्यै नमः | ५ - ओं निशाचर्यै नमः |
| ३ - ओं वेदमात्रे नमः | ६ - ओं कणपहस्तायै नमः |
- अथ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री राहु गायत्री

ओं नख ध्वजाय विद्महे पद्महस्ताय धीमहि ।

तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

ओं सैहिकेयाय विद्महे धूम्रवर्णाय धीमहि ।

तन्नो राहुः प्रचोदयात् ॥

॥ अथ श्री राहुग्रह आराधन क्रमः ॥

राहोः अष्टपरिवार देवताः

- | | |
|---------------|---------------------|
| १- काकात्मकः | ५- वक्रगः |
| २- राहुः | ६- सिंहिकातनयः |
| ३- उरगाकृतिः | ७- चन्द्रसूर्यरिपुः |
| ४- धूम्राङ्गः | ८- सर्वदेवभयङ्करः |

अस्य श्री राहुग्रह महामन्त्रस्य । वामदेव ऋषये नमः- शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः - मुखे । राहुग्रह देवतायै नमः - हृदि । नी बीजाय नमः - गुह्ये । हीं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । कां कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवाङ्गि ॥

न्यासः

- धूम्रवर्णाय नमः - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः ।
करालाय नमः - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा ।
खण्डवराय नमः - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट् ।
शूराय नमः - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुं ।
शूलधराय नमः - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट् ।
नील सिंहासनस्थाय नमः- करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट् ।

- | | | | |
|---------------------|--------------|--------------------------------|------------|
| १- नीलाम्बराय नमः | - शिरसि | ११- तपोमूर्तये नमः | - हृदि |
| २- लोकवन्दिताय नमः | - ललाटे | १२- विधुन्तुदाय नमः | - नाभौ |
| ३- राहवे नमः | - कर्णयोः | १३- विकटाय नमः | - कट्यां |
| ४- अर्धशरीराय नमः | - श्रोत्रयोः | १४- सुरपूजिताय नमः | - ऊर्वोः |
| ५- करालास्याय नमः | - नासिकयोः | १५- स्वर्भानवे नमः | - जान्वोः |
| ६- शूलपाणये नमः | - मुखे | १६- सर्पाकाराय नमः | - जङ्घयोः |
| ७- सिंहाकासूनवे नमः | - जिह्वायां | १७- गृहाधिपाय नमः | - गुल्फयोः |
| ८- कष्टनाशनाय नमः | - कण्ठे | १८- नीलाम्बराय नमः | - पादौ |
| ९- भुजङ्गेशाय नमः | - भुजयोः | १९- सिंहिकासुताय नमः | - सवाङ्गि |
| १०- नीलमाल्याय नमः | - हस्तयोः | भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । | |

ध्यानम्

कराल वदनं खड्गचर्मशूल वरान्वितः ।
नीलसिंहासनस्थश्च ध्यायेत् राहुः प्रशान्तये ॥

॥ अथ श्री केतुग्रह आराधनक्रमः ॥

केतोः अष्ट परिवार देवताः

- | | |
|----------------------|-----------------|
| १- कालात्मकः | ५- वक्रगमनः |
| २- केतुः | ६- उत्पातादिकरः |
| ३- कालमृत्युस्वरूपकः | ७- चण्डः |
| ४- धूम्राङ्गः | ८- वायुसखः |

अस्य श्री केतुग्रह महामन्त्रस्य । पुरन्दर ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । केतुग्रह देवतायै नमः - हृदि । रां बीजाय नमः - गुह्ये । रीं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । रूं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सवाङ्गि ॥

न्यासः

- | | | |
|------------------|-------------------------|-----------------------|
| केतवे नमः | - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः | - हृदयाय नमः । |
| धूम्रवर्णाय नमः | - तर्जनीभ्यां नमः | - शिरसे स्वाहा । |
| विकृताननाय नमः | - मध्यमाभ्यां नमः | - शिखायै वषट् । |
| गृध्रासनाय नमः | - अनामिकाभ्यां नमः | - कवचाय हुं । |
| लम्बकाय नमः | - कनिष्ठिकाभ्यां नमः | - नेत्रत्रयाय वौषट् । |
| सर्वफलाप्तये नमः | - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | - अस्त्राय फट् । |

- | | | | |
|---------------------|--------------|---------------------|-------------|
| १- चित्रवर्णाय नमः | - शिरसि | ९- सुरश्रेष्ठाय नमः | - बाहूवोः |
| २- धूम्रवर्णाय नमः | - ललाटे | १०- महोरगाय नमः | - कुक्षौ |
| ३- पिङ्गलाक्षाय नमः | - नेत्रयोः | ११- सिंहासनाय नमः | - कट्यां |
| ४- रक्तलोचनाय नमः | - श्रोत्रयोः | १२- महासुराय नमः | - नाभौ |
| ५- सुवर्णाभाय नमः | - नासिकयोः | १३- महाशीर्षाय नमः | - ऊर्वोः |
| ६- सिंहिकासुताय नमः | - भुजयोः | १४- प्रकोपनाय नमः | - जान्वोः |
| ७- केतवे नमः | - कण्ठे | १५- रौद्राय नमः | - पादयोः |
| ८- गृहाधिपाय नमः | - स्कन्दयोः | १६- रविमर्दकाय नमः | - सवाङ्गि । |
- भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

धूम्रवर्णं द्विबाहुं च केतुं च निकृताननं ।
गृध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत् सर्वफलाप्तये ॥

सर्प अधिदेवता निऋति प्रत्यधिदेवता सहिताय अशन शयन योग भोग सुख पितामह कारकाय मायाम्बा समेताय शनिपार्श्ववर्तिने कुम्भराश्यधिपाय राहवे इदं न मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|---------------------------------------|---------------------------------------|
| १ - ओं ह्रीं राहवे नमः | ११ - ओं ह्रीं ग्रहश्रेष्ठाय नमः |
| २ - ओं ह्रीं सिंहिकेयाय नमः | १२ - ओं ह्रीं यातुधानकुलोद्भवाय नमः |
| ३ - ओं ह्रीं सुरशत्रवे नमः | १३ - ओं ह्रीं कालात्मने नमः |
| ४ - ओं ह्रीं नीलजीमूतसङ्काशाय नमः | १४ - ओं ह्रीं स्वर्भानवे नमः |
| ५ - ओं ह्रीं वरदहस्ताय नमः | १५ - ओं ह्रीं महासौख्य प्रदायिने नमः |
| ६ - ओं ह्रीं काश्यपनन्दनाय नमः | १६ - ओं ह्रीं उपारागकराय नमः |
| ७ - ओं ह्रीं छायास्वरूपिणे नमः | १७ - ओं ह्रीं राज्यदाताय नमः |
| ८ - ओं ह्रीं नीलाम्बरधराय नमः | १८ - ओं ह्रीं भक्तरक्षकाय नमः |
| ९ - ओं ह्रीं शनिवत फलदायकाय नमः | १९ - ओं ह्रीं कृष्णसर्पस्वरूपाय नमः |
| १० - ओं ह्रीं अश्विनी तारकोद्भवाय नमः | २० - ओं ह्रीं सर्वाभीष्ट फलप्रदाय नमः |

राहुग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	सर्पः
२	प्रत्यधिदेवता	निऋतिः
३	स्थानम्	नैऋतिः
४	कोणः	शूर्पाकारः
५	समिध्	दूर्वा
६	धान्यम्	माषः
७	रत्नम्	वैडूर्यम्
८	देशः	बर्बरदेशः
९	अभिमुखम्	दक्षिणाभिमुखम्
१०	शाखा	-
११	पत्नी	मायाम्बा
१२	गोत्रम्	पैठीनस गोत्रम्
१३	वर्णः	नीलः
१४	वाहनम्	कृष्णसिंहम्
१५	नैवेद्यम्	माषान्नम्
१६	मन्त्रः	कयाश्चित्र - आयज्ञौ - यत्ते देवी

॥ अथ श्री केतुग्रह आराधनक्रमः ॥

केतोः अष्ट परिवार देवताः

- | | |
|----------------------|-----------------|
| १- कालात्मकः | ५- वक्रगमनः |
| २- केतुः | ६- उत्पातादिकरः |
| ३- कालमृत्युस्वरूपकः | ७- चण्डः |
| ४- धूम्राङ्गः | ८- वायुसखः |

अस्य श्री केतुग्रह महामन्त्रस्य । पुरन्दर ऋषये नमः - शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे । केतुग्रह देवतायै नमः - हृदि । रां बीजाय नमः - गुह्ये । रीं शक्तये नमः - दक्षिणस्तने । रूं कीलकाय नमः - वामस्तने । विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे ॥

न्यासः

- | | | |
|------------------|-------------------------|-----------------------|
| केतवे नमः | - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः | - हृदयाय नमः । |
| धूम्रवर्णाय नमः | - तर्जनीभ्यां नमः | - शिरसे स्वाहा । |
| विकृताननाय नमः | - मध्यमाभ्यां नमः | - शिखायै वषट् । |
| गृध्रासनाय नमः | - अनामिकाभ्यां नमः | - कवचाय हुं । |
| लम्बकाय नमः | - कनिष्ठिकाभ्यां नमः | - नेत्रत्रयाय वौषट् । |
| सर्वफलाप्तये नमः | - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः | - अस्त्राय फट् । |

- | | | | |
|---------------------|--------------|---------------------|---------------|
| १- चित्रवर्णाय नमः | - शिरसि | ९- सुरश्रेष्ठाय नमः | - - बाहूवोः |
| २- धूम्रवर्णाय नमः | - ललाटे | १०- महोरगाय नमः | - कुक्षौ |
| ३- पिङ्गलाक्षाय नमः | - नेत्रयोः | ११- सिंहासनाय नमः | - कट्यां |
| ४- रक्तलोचनाय नमः | - श्रोत्रयोः | १२- महासुराय नमः | - नाभौ |
| ५- सुवर्णाभाय नमः | - नासिकयोः | १३- महाशीर्षाय नमः | - ऊर्वोः |
| ६- सिंहिकासुताय नमः | - भुजयोः | १४- प्रकोपनाय नमः | - जान्वोः |
| ७- केतवे नमः | - कण्ठे | १५- रौद्राय नमः | - पादयोः |
| ८- गृहाधिपाय नमः | - स्कन्दयोः | १६- रविमर्दकाय नमः | - सर्वाङ्गे । |
- भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

धूम्रवर्णं द्विबाहुं च केतुं च निकृताननं ।
गृध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत् सर्वफलाप्तये ॥

पञ्चमावरणम्

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| १- ओं माहेश्वर्यै नमः | ४- ओं नारसिंह्यै नमः |
| २- ओं वाराह्यै नमः | ५- ओं कौमार्यै नमः |
| ३- ओं वैष्णव्यै नमः | |
- अथ पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः ।

षष्ठावरणम्

- | | |
|------------------------|--------------------------|
| १- ओं रेखायै नमः | ६- ओं सर्वसंमोहिन्यै नमः |
| २- ओं बुद्ध्यै नमः | ७- ओं सिद्धायै नमः |
| ३- ओं अहङ्कारायै नमः | ८- ओं लक्ष्म्यै नमः |
| ४- ओं युद्धायै नमः | ९- ओं षडाननायै नमः |
| ५- ओं यज्ञेश्वर्यै नमः | |
- अथ षष्ठावरण देवताभ्यो नमः ।

सप्तमावरणम्

- | | |
|---------------------------|----------------------|
| १- ओं वरसिद्धायै नमः | ४- ओं सुशोभनायै नमः |
| २- ओं त्रिखण्डायै नमः | ५- ओं सर्वज्ञायै नमः |
| ३- ओं ओं कालतापनिकायै नमः | |
- अथ सप्तमावरण देवताभ्यो नमः ।

श्री केतु गायत्री

अश्वध्वजाय विद्महे शूलहस्ताय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

ब्रह्मपुत्राय विद्महे चित्रवर्णाय धीमहि ।
तन्नः केतुः प्रचोदयात् ॥

ब्रह्मा अधिदेवता चित्रगुप्त प्रत्यधिदेवता सहिताय चित्त शुद्धि ज्ञान वैराग्य मुक्ति
मातामहकारकाय अरुणाम्बा समेताय शनि पार्श्ववर्तिनि मकर राशिस्थिताय केतवे इदं न
मम । इमं बलिं ददामि ॥

॥ विशेष नामावलिः ॥

- | | |
|-------------------------------|------------------------------------|
| १- ओं हीं केतुग्रहमूर्तये नमः | ९- ओं हीं महासुरकुलोद्भवाय नमः |
| २- ओं हीं सिंहीकृतसंभूताय नमः | १०- ओं हीं सर्वोपद्रवकारकाय नमः |
| ३- ओं हीं महाभीतिकराय नमः | ११- ओं हीं उपरागसुगोचराय नमः |
| ४- ओं हीं रक्तलोचनाय नमः | १२- ओं हीं अशेषजनपूजिताय नमः |
| ५- ओं हीं वरदहस्ताय नमः | १३- ओं हीं शुभाशुभफलप्रदाय नमः |
| ६- ओं हीं चित्रशुभ्रधराय नमः | १४- ओं हीं रवीन्दुद्युतिशमनाय नमः |
| ७- ओं हीं चित्रध्वजपताकाय नमः | १५- ओं हीं भक्तरक्षकाय नमः |
| ८- ओं हीं जैमिनीगोत्रजाय नमः | १६- ओं हीं भक्ताभीष्ट फलप्रदाय नमः |

केतुग्रह संबन्धि विशेष विषय पट्टिका		
१	अधिदेवता	ब्रह्मा
२	प्रत्यधिदेवता	चित्रगुप्तः
३	स्थानम्	वायव्याम्
४	कोणः	ध्वजाकारः
५	समिध्	दर्भः
६	धान्यम्	कुळुत्थम्
७	रत्नम्	गोमेदः
८	देशः	अन्तर्वेदिः
९	अभिमुखम्	दक्षिणाभिमुखम्
१०	शाखा	-
११	पत्नी	अरुणाम्बा
१२	गोत्रम्	जैमिनि गोत्रम्
१३	वर्णः	चित्र वर्णः
१४	वाहनम्	गृध्रः
१५	नैवेद्यम्	चित्रान्नम्
१६	मन्त्रः	केतुं - ब्रह्मादेवानां - सचित्रचित्रं